जॉन डीवी की शिक्षा दृष्टि और उसकी प्रासंगिकता

दिनेश कुमार गुप्ता*
साजिदा सादिक**

जॉन डीवी एक महान शिक्षाशास्त्री थे, उनके द्वारा प्रज्ज्वलित ज्योति उनके जीवन काल में ही नहीं, अपितु आज भी विश्व को शिक्षा की नवीन दिशा दे रही है। उनका प्रभाव आधुनिक शिक्षा पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने शिक्षा में क्रियात्मक पद्धति, प्रगतिशील विद्यालय, क्रियाप्रधान पाठ्यक्रम, वैयक्तिकता तथा सामाजिकता का समन्वय, योजना पद्धति आदि का प्रारंभ किया, जिसका अनुकरण आज भी किया जा रहा है। डीवी ने बाल केंद्रित शिक्षा को महत्व दिया है। उन्होंने वैयक्तिकता का विकास सामाजिक वातावरण में करने पर बल दिया। उन्होंने आज के भौतिकवादी युग के तदनुरूप शिक्षा योजना बनाई। आज विश्व की आधुनिक शिक्षा की संरचना डीवी की विचारधाराओं पर टिकी है।

विश्व में कई महत्वपूर्ण विचारधाराएँ उत्पन्न हुईं, जिसने मानव समाज को प्रभावित किया। इनमें सबसे प्राचीन विचारधारा आदर्शवाद की थी, जिसने नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना पर बल दिया। इसके बाद प्रकृतिवादी दर्शन आया जिसने मनुष्य के स्वाभाविक विकास को महत्व दिया। तत्पश्चात् यथार्थवादी दर्शन का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने इंद्रियों से यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने पर ज़ोर दिया। लेकिन समय, परिस्थिति व आवश्यकता के बदलने के साथ-साथ एक नवीन एवं आधुनिक विचारधारा ने जन्म लिया, जिसके प्रणेता जॉन डीवी थे। इस वैज्ञानिक विचारधारा को प्रयोगवाद या प्रयोजनवाद के नाम से जानते हैं। यह प्रयोगवाद, आदर्शवाद व प्रकृतिवाद के मध्य की विचाराधारा है।

प्लेटो ने 'विचार' को सत्य माना, रूसो ने 'प्रकृति' को तथा मांटेसरी ने 'इंद्रियों द्वारा प्रत्यक्षीकरण को' तो डीवी ने 'अनुभव तथा प्रयोग' को सत्य माना है। वे सभी चीज़ों को वैज्ञानिक कसौटी पर कसते हैं और तभी सत्य मानते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में डीवी का शिक्षा दर्शन विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

शिक्षा का अर्थ

जॉन डीवी शिक्षा को सामाजिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करते थे। उनके अनुसार न तो शिक्षा साध्य है और न मनुष्य जीवन की तैयारी का

* *शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) 302004
** *प्राचार्या*, एम.के.बी. महिला बी.एड. महाविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) 302016

साधन, यह तो स्वयं जीवन है। उनका स्पष्टीकरण है कि मनुष्य कुछ जन्मजात शक्तियाँ लेकर पैदा होता है। सामाजिक चेतना में भाग लेने से उसकी इन शक्तियों में विकास होता है। इन शक्तियों को डीवी ने शिक्षा के मनोवैज्ञानिक व सामाजिक पक्ष कहा है। मनोवैज्ञानिक पक्ष में बालक की जन्मजात शक्तियाँ, रुचियाँ व व्यक्तिगत विशेषताएँ आती हैं व सामाजिक पक्ष में सामाजिक दशाएँ, परिवार, संघ समूह, सभ्यता व संस्कृति आदि आते हैं। बालक समाज में जन्म लेता है तथा सामाजिक सहयोग से विकास करता है, इसलिए उसकी शैक्षिक प्रक्रिया समाज के उन्नयन से संबंधित होती है व समाज व्यक्ति की शिक्षा के लिए उत्तरदायी होता है। डीवी ने अपने शिक्षा दर्शन में प्रयोग व अनुभव को केंद्रीय स्थान प्रदान किया है। उनका मानना है कि व्यक्ति इस जगत् में खाली नहीं बैठा रहता, अपितु वह हर समय कुछ न कुछ अनुभव करता रहता है, इन्हीं अनुभवों के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को शिक्षा कहते हैं। डीवी के शब्दों में, "शिक्षा, अनुभवों के संधारणीय पुनर्निर्माण द्वारा जीवन की प्रक्रिया है। वह व्यक्ति में उन समस्त क्षमताओं का विकास है, जो उसको अपने वातावरण को नियंत्रित करने तथा अपनी संभावनाओं को पूर्ण करने के योग्य बनाती है।" (त्यागी व पाठक, 2010, पृ. 705)

शिक्षा के उद्देश्य

डीवी जीवन के किसी अंतिम उद्देश्य में विश्वास नहीं करते थे। शिक्षा का कोई निश्चित उद्देश्य नहीं हो सकता। उनके अनुसार यदि शिक्षा का कोई उद्देश्य है, तो यही कि उसके द्वारा मनुष्यों में ऐसे गुणों और क्षमताओं का विकास किया जाए कि वह अपने वर्तमान जीवन को कुशलतापूर्वक जी सके और अपने भावी जीवन का मार्ग प्रशस्त कर सके। डीवी का मानना है कि देश, काल, परिस्थितियों व आवश्यकताओं के अनुसार उद्देश्य बदलते रहते हैं। तथापि, उन्होंने शिक्षा द्वारा कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने पर बल दिया है।

अनुभवों का पुनर्निर्माण व पर्यावरण के साथ समायोजन

मानव जीवन गतिशील है, परिवर्तनशील है। अत: उसकी शिक्षा भी गतिशील एवं परिवर्तनशील होनी चाहिए। अगर शिक्षा का कोई उद्देश्य हो सकता है तो यही कि मनुष्य अपने जीवन की गतिशीलता के साथ अपने आपको समायोजित करता चले।

सामाजिक कुशलता का विकास

सामाजिक दृष्टि से डीवी का शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक कुशलता प्राप्त करना है। सामाजिक कुशलता का अर्थ यह है कि व्यक्ति को इतना योग्य बनाना, जिससे वह समाज के सभी आवश्यक कार्यों को कुशलतापूर्वक कर सके। जनतांत्रिक व्यवस्था में कुशल नागरिक का होना आवश्यक है।

लोकतंत्रीय जीवन का प्रशिक्षण

डीवी लोकतंत्रीय समाज के समर्थक थे। ऐसे समाज के सभी कार्यों में कुशलतापूर्वक भाग लेने के लिए उनकी दृष्टि से एक व्यक्ति में सात प्रकार की क्षमताएँ होनी चाहिए, यथा— स्वास्थ्य, क्रिया करने की क्षमता, योग्य गृहस्थ,

व्यवसाय, नागरिकता, अवकाश काल का उचित उपयोग व नैतिकता। इनके अंतर्गत शिक्षा के सभी पूर्व निर्धारित उद्देश्य—शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक व चारित्रिक, व्यावसायिक एवं नागरिकता की शिक्षा समाहित है। अंतर केवल इतना है कि डीवी इनका कोई मापदंड निश्चित नहीं करते। समाज की परिवर्तित स्थितियों में इनका स्वरूप बदलता रहेगा।

शिक्षा की पाठ्यचर्या

डीवी शिक्षा में प्रचलित सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के विरोधी थे। उन्होंने ऐसे पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जिसमें व्यक्ति व समाज दोनों को महत्व मिल सके, उन्होंने क्रियात्मकता व व्यावहारिकता पर आधारित पाठ्यक्रम निर्माण के कुछ सिद्धांत निर्धारित किए।

रुचि का सिद्धांत

डीवी के अनुसार, बालकों में चार प्रकार की रुचियाँ पाई जाती हैं, यथा — वार्तालाप व विचार विनिमय में रुचि, खोज में रुचि, रचना की रुचि तथा कलात्मक अभिव्यक्ति में रुचि। डीवी ने इन रुचियों के आधार पर पाठ्यक्रम में भाषा, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, सिलाई, ड्राइंग, कला, संगीत आदि को स्थान प्रदान किया है।

क्रियाशीलता का सिद्धांत

डीवी ने पाठ्यक्रम के निर्माण में क्रियाशीलता के सिद्धांत पर बल दिया है। डीवी के शब्दों में, "विद्यालय समुदाय का अंग है। इसलिए यदि ये क्रियाएँ समुदाय की क्रियाओं का रूप ग्रहण कर लेंगी, तो ये बालक में नैतिक गुणों एवं पहलकदमी तथा स्वतंत्रता के दृष्टिकोण का विकास करेंगी। साथ ही ये उसे नागरिकता का प्रशिक्षण देंगी और उसके आत्मानुशासन को ऊँचा उठायेंगी।'' (त्यागी व पाठक, 2010, पृ. 706)

उपयोगिता का सिद्धांत

डीवी का मानना है कि मनुष्य की मूलभूत सामान्य समस्याएँ भोजन, निवास, वस्त्र, घर की सजावट व आर्थिक उत्पादन, विनिमय तथा उपयोग से संबंधित हैं। इन्हीं समस्याओं को हल करना जीवन का उद्देश्य है। अत: पाठ्यक्रम में उन विषयों व क्रियाओं को स्थान दिया जाना चाहिए, जो इन समस्याओं के समाधान में सहायता दें।

सहसंबंध सिद्धांत

डीवी का विचार है कि सभी विषयों को अलग-अलग करके शिक्षा देना अमनोवैज्ञानिक तथा अव्यावहारिक है। विषयों को एक-दूसरे से सहसंबंधित करके पढ़ाया जाए तभी बालक सरलता से सीख सकेंगे। इस ढंग से पढ़ाने से एक विषय के ज्ञान का अनुभव दूसरे विषयों के ज्ञानार्जन में सहायक होता है।

शिक्षक संकल्पना

डीवी शिक्षक को समाज का सेवक मानते हैं। उसका कर्त्तव्य बालकों में वांछित सामाजिक गुणों व आदतों का निर्माण करना एवं एक सुंदर सामाजिक जीवन की नींव डालना है। अत: विद्यालय में उसे ऐसा सामाजिक वातावरण निर्मित करना है जिसमें बालक के सामाजिक व्यक्तित्व का विकास हो सके। शिक्षक को अपना ज्ञान बालकों पर कभी नहीं लादना चाहिए, अपितु उन्हें ज्ञान प्राप्ति का मार्ग ही बताना चाहिए।

डीवी शिक्षक को मित्र, पथ-प्रदर्शक व सहायक के रूप में देखते हैं, वह उसे तानाशाह की तरह आज्ञा देने वाला या उपदेश देने वाला नहीं मानते, वरन् उसे बालक की रुचियों, अभिरुचियों, क्षमताओं आदि को परखने वाला तथा उसके अनुसार उसे वातावरण देने वाला मनोवैज्ञानिक मानते हैं।

शिक्षार्थी संकल्पना

डीवी प्रत्येक बालक को अपने स्वाभाविक विकास के लिए स्वतंत्रता देना चाहते थे। उनका मत था कि शिक्षा की योजना बनाते समय हमें बालकों की मनौवैज्ञानिक व सामाजिक स्थिति व आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक बालक को अपनी रुचि, रूझान व आवश्यकतानुसार समाज सम्मत विकास की पूरी-पूरी स्वतंत्रता देने के वे सबसे बड़े समर्थक थे। बालक को स्वयं आदर्शों, मूल्यों व प्रतिमानों के निर्माण का अवसर दिया जाना चाहिए, जिससे वे रटे-रटाये गए मार्ग पर न चलकर स्वयं नवीन मार्ग का सृजन कर सकें। शिक्षार्थी में सामाजिक कुशलता का विकास आवश्यक है।

विद्यालय संकल्पना

डीवी विद्यालय और समाज के मध्य संबंध मानते हैं, विद्यालय, व्यक्ति का विकास तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाया गया है। विद्यालय समाज का लघु रूप है, विद्यालय में जहाँ व्यक्ति को अपनी रुचि व आवश्यकतानुसार विकास करने की स्वतंत्रता हो, वहीं सामाजिक चेतना तथा अच्छे और सुसंस्कृत समाज के निर्माण की क्षमता भी होनी चाहिए। विद्यालय समाज का प्रतिनिधि हो सकता है जो सामाजिक समस्याओं का निराकरण करने के साथ-साथ समाज को प्रगतिशील मार्ग दिखा सके तथा समाज के अनुरूप अपने को ढाल सके। विद्यालय को सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए, समाज के विकास से संबंधित विषयों का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाना चाहिए। डीवी के शब्दों में, "विद्यालय एक सामाजिक संस्था है, शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया होने के कारण विद्यालय वह स्थान है जो सामुदायिक जीवन का निर्माण करता है जिसमें वे समस्त साधन केंद्रित होते हैं जो बालक को अपनी शक्ति को सामाजिक उद्देश्य के लिए प्रयोग करने की योग्यता प्रदान करते हैं।" (सिंह, ओ.पी., 2004, पृ. 133–134)

अनुशासन संकल्पना

डीवी अनुशासन की परंपरागत धारणा का विरोध करते हैं। वे अनुशासन की स्थापना में सामाजिक जीवन के महत्व पर बल देते हैं। विद्यालय में अनुशासन का अर्थ सामाजिक अनुशासन है। अत: डीवी सामाजिक अनुशासन में बालक की स्वाभाविक भावनाओं को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करने के समर्थक हैं। डीवी का विचार है कि बालक इस प्रकार के प्रशिक्षण से अपने चरित्र का विकास करेगा, जो व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों ही रूपों में उपयोगी होगा। डीवी का विश्वास है कि यदि बालक की क्रियाएँ उद्देश्यपूर्ण हैं और उनको दूसरों के सहयोग व संपर्क द्वारा पूर्ण किया जाता है, तो उसका अनुशासनात्मक प्रभाव होगा। डीवी के शब्दों में, "कार्य को करने से कुछ परिणाम निकलते हैं। यदि इन कार्यों को सामाजिक तथा सहयोगी ढंग से किया जाए, तो इनसे अपने

प्रकार का अनुशासन उत्पन्न होता है" (त्यागी व पाठक, 2010, पृ. 707)।

शिक्षण विधियाँ

डीवी का विश्वास था कि प्रत्येक बालक का मस्तिष्क समान नहीं होता है, इस दृष्टि से प्रत्येक बालक के लिए एक ही प्रकार की शिक्षण पद्धति लाभप्रद नहीं हो सकती। बालक को पूर्णरूपेण विकसित करने के लिए बालक तथा शिक्षक, दोनों को ऐसी शिक्षण पद्धति का चुनाव करना चाहिए जिसका बालक के जीवन से संबंध हो तथा जिसमें क्रियाशीलता, व्यावहारिकता, अनुभव आदि का समावेश हो। इस दृष्टि से डीवी ने शिक्षण पद्धति को दो सिद्धांतों पर आधारित किया। प्रथम — क्रिया करके अथवा अनुभव द्वारा सीखने का सिद्धांत। बालक को क्रिया के माध्यम से शिक्षित करना चाहिए, क्योंकि क्रिया करने से नये-नये विचारों का जन्म होता है। दूसरे शब्दों में, बालक के समक्ष ऐसी परिस्थितियों को प्रस्तुत करना चाहिए, जिनमें रहते हुए वह रचनात्मक क्रियाओं तथा प्रयोग द्वारा विभिन्न बातों को सीखते हुए भौतिक व सामाजिक वातावरण की अनेक समस्याओं का सरलतापूर्वक समाधान करना सीख सके। द्वितीय — रुचि का सिद्धांत, अर्थात् शिक्षक को बालक के मस्तिष्क में ज्ञान बलपूर्वक नहीं भरना चाहिए। शिक्षक का यह कर्त्तव्य है कि बालक की स्वाभाविक रुचियों, अभिरुचियों व योग्यताओं एवं क्षमताओं को भली प्रकार समझे तथा उन्हें उनकी रुचियों के अनुसार योजना बनाने तथा उसे क्रियान्वित करने के अवसर प्रदान करे। डीवी के शब्दों में, "रुचि का श्रेष्ठ सिद्धांत प्रस्तावित कार्य एवं आत्मा की तादात्म्यता के सिद्धांत की मान्यता है अथवा यह कि प्रस्तावित कार्य की दिशा आत्माभिव्यक्ति की पूर्ति की ओर है" (सक्सैना एवं पाण्डेय, 2003, पृ. 183)। डीवी ने मुख्य रूप से सहसंबंध विधि, खोज विधि या अन्वेषण विधि, योजना विधि, करके सीखना या अनुभवों द्वारा सीखना, निरीक्षण विधि, प्रयोग विधि का प्रयोग शिक्षण में करने पर बल दिया है।

आधुनिक शैक्षिक प्रक्रिया पर डीवी का प्रभाव

डीवी का प्रभाव भारतीय शिक्षा पर बहुत अधिक दिखाई देता है। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है समय एवं परिस्थितियों के साथ इसमें परिवर्तन अवश्यंभावी है। जहाँ प्राचीन भारत में शिक्षा का केंद्र बिंदु 'धर्म' था, वहीं आज शिक्षा का केंद्र 'समाज' है। आज सभी मान्यताओं, मूल्यों तथा परम्पराओं को वर्तमान की कसौटी पर कसा जा रहा है, सभी में वैज्ञानिकता एवं उपयोगिता देखी जा रही है। इससे स्पष्ट हो रहा है कि वर्तमान शिक्षा का आधार प्रयोजनवाद व भौतिकवाद है। जहाँ एक ओर भारतवर्ष में शिक्षा संस्थाओं को सामाजिक जागरूकता, संधारणीय शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा तथा नागरिक प्रशिक्षण का केंद्र बनाने का प्रयास चल रहा है, वहीं इसे आर्थिक विकास एवं आत्मनिर्भरता के साधन के रूप में देखा जा सकता है। इस प्रकार, कह सकते हैं कि भारतवर्ष में प्रयोगवादी विचारों का प्रभाव बहुत ही स्पष्ट है। विश्व के अन्य बहुतायत

देशों में भी डीवी के सिद्धांतों एवं विचारों को बल मिल रहा है। विश्व के लगभग सभी देश आज उन्हीं विषयों, उद्देश्यों को सम्मिलित कर रहे हैं जो उनके समाज के लिए उपयोगी हैं। इतना ही नहीं डीवी की 'योजना विधि' की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। नवीन शिक्षा प्रणाली में अध्ययन एवं मूल्यांकन का उत्तरदायित्व विद्यार्थियों को देने पर विचार किया जा रहा है।

रस्क के अनुसार

''शिक्षा में हम जॉन डीवी की उन सेवाओं के लिए बहुत आभारी हैं जिनके द्वारा उन्होंने ज्ञान के पुराने स्थिर आदर्शों के संचय को चुनौती दी तथा शिक्षा को वर्तमान जीवन की आवश्यकताओं के सम्पर्क में लाया तथा इसे सिद्धांत बताया की शिक्षा और दर्शन को समकालीन समस्याओं पर विचार करना चाहिए।'' (सक्सैना व पाण्डेय, 2003, पृ. 188)

संदर्भ

डीवी, जॉन और डेवी एवेलिन. 1915. स्कूल्स ऑफ़ टोमारी. ई.पी. दत्तन एंड कंपनी. न्यूयार्क. 681. फ़िफ्थ एवेन्यू.

डीवी, जॉन. 1916. *डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन–एन इंट्रोडक्शन टू द फ़िलोसोफ़ी ऑफ़ एजुकेशन*. मैकमिलन. न्यूयार्क

———. 1902. *द चाइल्ड एंड द करिकुलम*. यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, शिकागो.

———. 2007. शिक्षा के दर्शन की ज़रूरत. *शिक्षा-विमर्श*. नव-दिस. 2007. वर्ष 9. अंक 6. पृ. 5-11.

त्यागी, जी.एस.डी. और पी.डी. पाठक. 2010. *शिक्षा के सामान्य सिद्धांत*. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

सक्सैना, स्वरूप., एन.आर. और के.पी. पाण्डेय. 2003. *शिक्षा दर्शन तथा महान शिक्षाशास्त्री*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

सिंह, ओ.पी. 2004. *शिक्षा दर्शन एवं शिक्षाशास्त्री*. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.